फ़ैज़ाने म-दनी मुज़ा-करा (क़िस्त : 15)

Apne Liye Kafan Tayyar Rakhna Kaisa ? (Hindi)

अपने लिये कफ़न तय्यार रखना कैसा ?

(मअ़ दीगर दिलचस्प सुवाल जवाब)

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

येह रिसाला शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी ﷺ के म-दनी मुज़ा-करे की रोशनी में मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या के शो'बे "फ़ैज़ाने म-दनी मुज़ा-करा" की त़रफ़ से नए मवाद के काफ़ी इज़ाफ़े के साथ मुरत्तब किया गया है।

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या **इस्लामी सबक़** पढ़ने से पहले जैल में दी हुई **दुआ** पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे **याद रहेगा** । दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इल्मो हिक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले !

(اَلْمُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये ।

त़ालिबे ग़मे मदीना
बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इल्म पर अ़मल न किया) ।

(تاریخ دمشق لابن عساکر ج ۵۱ ص ۱۳۸ دارالفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मु-तवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक-त-बतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये ।

www.dawateislami.net

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

येह रिसाला "(**अपने लिये कफ़न तय्यार रखना कैसा ?**)"

दा'वते इस्लामी की मजलिस "**अल मदीनतुल इल्मिय्या** (शो'बए फ़ैज़ाने म-दनी मुज़ा-करा)" ने **उर्दू** ज़बान में मुरत्तब किया है। मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त् में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक-त-बतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है।

इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़-लत़ी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, E-mail या SMS) मुत्तलअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

हुरूफ़ की पहचान

फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
स = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ	थ = تھ	त = ت
ह़ = ح	छ = چھ	च = چ	झ = جھ	ज = ج
ढ = ڈھ	ड = ڈ	ध = دھ	द = د	ख़ = خ
ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر	ज़ = ذ
ज़ = ض	स़ = ص	श = ش	स = س	ज़ = ژ
फ़ = ف	ग़ = غ	अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط
घ = گھ	ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق
ह = ہ	व = و	न = ن	म = م	ल = ل
ई = اِی / ـِی	इ = اِ	ऐ = ـَے	ए = ے	य = ی

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)
मक-त-बतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात
MO. 9374031409 • E-mail :translationmaktabhind@dawateislami.net

www.dawateislami.net

पहले इसे पढ़ लीजिये !

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीगे़ कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के बानी, शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी र-ज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने अपने मख़्सूस अन्दाज़ में सुन्नतों भरे बयानात, इ़ल्मो ह़िक्मत से मा'मूर म-दनी मुज़ा-करात और अपने तरबियत याफ़्ता मुबल्लिग़ीन के ज़रीए़ थोड़े ही अ़र्से में लाखों मुसल्मानों के दिलों में म-दनी इन्क़िलाब बरपा कर दिया है, आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की सोह़बत से फ़ाएदा उठाते हुए कसीर इस्लामी भाई वक़्तन फ़ वक़्तन मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर होने वाले म-दनी मुज़ा-करात में मुख़्तलिफ़ क़िस्म के मौज़ूआ़त म-सलन अ़क़ाइदो आ'माल, फ़ज़ाइलो मनाक़िब, शरीअ़तो त़रीक़त, तारीख़ व सीरत, साइन्स व त़िब, अख़्लाक़िय्यात व इस्लामी मा'लूमात, रोज़मर्रा मुआ़-मलात और दीगर बहुत से मौज़ूआ़त से मु-तअ़ल्लिक़ सुवालात करते हैं और शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه उन्हें ह़िक्मत आमोज़ और इ़श्क़े रसूल में डूबे हुए जवाबात से नवाज़ते हैं।

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के इन अ़त़ा कर्दा दिलचस्प और इ़ल्मो ह़िक्मत से लबरेज़ म-दनी फूलों की ख़ुश्बूओं से दुन्या भर के मुसल्मानों को महकाने के मुक़द्दस जज़्बे के तह़्त अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या का शो'बा **''फ़ैज़ाने म-दनी मुज़ा-करा''** इन म-दनी मुज़ा-करात को काफ़ी तरामीम व इज़ाफ़ों के साथ **''फ़ैज़ाने म-दनी मुज़ा-करा''** के नाम से पेश करने की सआ़दत ह़ासिल कर रहा है। इन तह़रीरी गुलदस्तों का मुत़ा-लआ़ करने से اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ अ़क़ाइदो आ'माल और ज़ाहिरो बात़िन की इस्लाह़, मह़ब्बते इलाही व इ़श्क़े रसूल की ला ज़वाल दौलत के साथ साथ मज़ीद हुसूले इ़ल्मे दीन का जज़्बा भी बेदार होगा।

इस रिसाले में जो भी ख़ूबियां हैं यक़ीनन रब्बे रह़ीम عَزَّوَجَلَّ और उस के मह़बूबे करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अ़त़ाओं, औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام की इनायतों और अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की शफ़्क़तों और पुर ख़ुलूस दुआ़ओं का नतीजा हैं और ख़ामियां हों तो उस में हमारी ग़ैर इरादी कोताही का दख़्ल है।

शो'बए फ़ैज़ाने म-दनी मुज़ा-करा

12 र-मज़ानुल मुबारक 1436 सि.हि./30 जून 2015 ई.

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

अपने लिये कफ़न तय्यार रखना कैसा ?

(मअ़ दीगर दिलचस्प सुवाल व जवाब)

शैत़ान लाख सुस्ती दिलाए येह रिसाला (33 सफ़ह़ात) मुकम्मल पढ़ लीजिये। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ मा'लूमात का अनमोल ख़ज़ाना हाथ आएगा।

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

नबियों के सुल्त़ान, रह़मते आ़-लमिय्यान, सरवरे ज़ीशान, सरदारे दो जहान, मह़बूबे रह़मान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रह़मत निशान है : "जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रह़मतें नाज़िल फ़रमाता है, दस गुनाह मिटाता है और दस द-रजात बुलन्द फ़रमाता है"।[1]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

अपने लिये कफ़न तय्यार रखना कैसा ?

अ़र्ज़ : अपने लिये पहले से कफ़न तय्यार रखना कैसा है ? नीज़ क़ब्र पहले से खुदवा कर रख सकते हैं या नहीं ?

इर्शाद : अपने लिये पहले से कफ़न तय्यार रखने में कोई ह़रज नहीं। ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन इस्माईल बुख़ारी

مدینہ

1 ..... نسائی، کتاب السھو، باب الفضل فی الصلوۃ علی النبی ﷺ، ص ۲۲۲، حدیث: ۱۲۹۴

www.dawateislami.net

عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَارِی ने बुख़ारी शरीफ़ में एक मुस्तक़िल बाब बांधा है जिस का नाम ही येह रखा है مَنِ اسْتَعَدَّ الْکَفَنَ فِیْ زَمَنِ النَّبِیِّ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم فَلَمْ یُنْکِرْ عَلَیْہِ'' नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ज़माने में जिस ने कफ़न तय्यार रखा और आप ने इस पर इन्कार न फ़रमाया'' इस बाब के तहूत एक ह़दीसे पाक नक़्ल फ़रमाई कि एक सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने साहिबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से कफ़न के लिये चादर मांगी तो आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने अ़त़ा फ़रमा दी और इस से मन्अ़ न फ़रमाया चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना सह्ल बिन सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रिवायत करते हैं कि एक ख़ातून नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम عَلَیْہِ اَفْضَلُ الصَّلٰوۃِ وَالتَّسْلِیْم की ख़िदमते अक़्दस में ख़ूब सूरत बुनी हुई ह़ाशिये वाली चादर लाई, तुम्हें मा'लूम है कि कौन सी चादर थी ? लोगों ने जवाब दिया वोह तहबन्द है। कहा : हां। उस औ़रत ने अ़र्ज़ की : ''मैं ने इसे अपने हाथ से बुना है ताकि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को पहनाऊं।'' नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उसे क़बूल फ़रमा लिया और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इस की ज़रूरत भी थी। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उस चादर को इज़ार बना कर हमारे पास तशरीफ़ लाए तो फ़ुलां सह़ाबी ने उस चादर की ता'रीफ़ की और

www.dawateislami.net

कहा कि "कितनी अच्छी है येह मुझे पहना दीजिये।" लोगों ने इस से कहा : "तुम ने अच्छा नहीं किया क्यूं कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इस की ज़रूरत थी और फिर तुम्हें येह भी मा'लूम है कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم किसी साइल का सुवाल रद नहीं फ़रमाते इस के बा वुजूद तुम ने चादर मांग ली।" तो उस ने कहा : "ख़ुदा की क़सम ! येह चादर मैं ने पहनने के लिये नहीं मांगी बल्कि इस लिये मांगी है कि मैं इस मुबारक चादर को अपना कफ़न बनाऊं।" ह़ज़रते सय्यिदुना सह्ल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि वोह मुबारक चादर उन (ख़ुश नसीब सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) का कफ़न बनी।[(1)]

मा'लूम हुवा कि कफ़न पहले से तय्यार रखा जा सकता है येही वज्ह है कि उन सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने कफ़न के लिये चादर मांगी और आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने भी इस से मन्अ़ न फ़रमाया बल्कि चादर अ़त़ा फ़रमा दी, मगर क़ब्र पहले से नहीं बनानी चाहिये कि मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : कफ़न पहले से तय्यार रखने में ह़रज नहीं और क़ब्र पहले से बनाना न चाहिये। **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है : ﴿وَمَا تَدْرِیْ نَفْسٌۢ بِاَیِّ اَرْضٍ تَمُوْتُ﴾ (پ۲۱، لقمان:۳۴)

❶...... بخاری، کتاب الجنائز، باب من استعد الکفن... الخ، ۱/ ۴۳۱-۴۳۲، حدیث: ۱۲۷۷

www.dawateislami.net

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और कोई जान नहीं जानती कि किस ज़मीन में मरेगी ।[1]

अलबत्ता बा'ज़ बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن ने अपना मुहा-सबा करने और दिल को नर्म रखने के लिये क़ब्र खुदवा कर रखी है इस में कोई ह़रज नहीं जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना रबीअ़ बिन ख़ुसैम رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने अपने घर में एक क़ब्र खोद कर रखी थी । जब कभी अपने दिल में सख़्ती पाते तो उस में लैट जाते और जब तक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ चाहता उस में रहते फिर येह आयते मुबा-रका तिलावत फ़रमाते :

﴿رَبِّ ارْجِعُوْنِ ۙ لَعَلِّيْۤ اَعْمَلُ صَالِحًا فِيْمَا تَرَكْتُ﴾ (پ۱۸، المؤمنون: ۹۹، ۱۰۰)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ मेरे रब मुझे वापस फैर दीजिये शायद अब मैं कुछ भलाई कमाऊं उस में जो छोड़ आया हूं । " इसे दोहराते रहते फिर ख़ुद को मुख़ात़ब कर के कहते : ऐ रबीअ़ ! तेरे रब ने तुझे वापस भेझ दिया है अब अ़मल कर ।[2] इसी त़रह़ ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْعَزِيْز के बारे में भी मज़्कूर है और येह भी लिखा है कि ऐसा करने वाले को अज्र दिया जाएगा ।[3]

مدینہ

1 ..... फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 9, स. 265

2 ..... احیاء العلوم، کتاب ذکر الموت ومابعدہ، بیان حال القبر...الخ، ۵/۲۳۸

3 ..... فتاویٰ تاتارخانیۃ، کتاب الصلاۃ، الفصل فی القبر والدفن، ۲/۱۷۲ ملخصاً

www.dawateislami.net

फ़िक्रे मदीना का मत़लब और इस की अहम्मिय्यत

अ़र्ज़ : फ़िक्रे मदीना किसे कहते हैं और येह क्यूं ज़रूरी है ?

इर्शाद : दा'वते इस्लामी की इस्त़िलाह़ में अपना मुह़ा–सबा करने को "फ़िक्रे मदीना" कहा जाता है, इस का आसान सा मत़लब येह है कि इन्सान उख़्रवी ए'तिबार से अपने मा'मूलाते ज़िन्दगी पर ग़ौर करे फिर जो काम उस की आख़िरत के लिये नुक़्सान देह साबित हो सकते हों, उन्हें दुरुस्त करने की कोशिश में लग जाए और जो काम उख़्रवी ए'तिबार से नफ़्अ़ बख़्श नज़र आएं, उन में बेहतरी के लिये इक़्दामात करे ।(1)

---

(1)...... اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी र–ज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ने इस पुर फ़ितन दौर में आसानी से नेकियां करने और गुनाहों से बचने के त़रीक़ए कार पर मुश्तमिल शरीअ़तो त़रीक़त का जामेअ़ मज्मूआ़ बनाम "म–दनी इन्आ़मात" ब सूरते सुवालात अ़त़ा फ़रमाया है । इस्लामी भाइयों के लिये 72, इस्लामी बहनों के लिये 63 और त़–ल–बए इल्मे दीन के लिये 92, दीनी त़ालिबात के लिये 83 और म–दनी मुन्नों और मुन्नियों के लिये 40 और "ख़ुसूसी इस्लामी भाइयों" (या'नी गूंगे बहरों) के लिये 27 म–दनी इन्आ़मात हैं । बे शुमार इस्लामी भाई, इस्लामी बहनें और त़–लबा "म–दनी इन्आ़मात" के मुत़ाबिक़ अ़मल कर के रोज़ाना सोने से क़ब्ल "फ़िक्रे मदीना" या'नी अपने आ'माल का जाएज़ा ले कर "म–दनी इन्आ़मात" के पोकिट साइज़ रिसाले में दिये गए ख़ाने पुर करते हैं । इन म–दनी इन्आ़मात को अपना लेने के बा'द नेक बनने और गुनाहों से बचने की राह में ह़ाइल रुकावटें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्लो करम से ब तदरीज दूर होती चली जाती हैं और इस की ब–र–कत से पाबन्दे सुन्नत बनने गुनाहों से नफ़रत करने और ईमान की ह़िफ़ाज़त के लिये कुढ़ने का ज़ेह्न भी बनता है ।

(शो'बए फ़ैज़ाने म–दनी मुज़ा–करा)

www.dawateislami.net

फ़िक्रे मदीना (या'नी अपना मुहा-सबा) करना इस लिये ज़रूरी है कि इस से नेक आ'माल बजा लाने की रग़बत पैदा होती और गुनाहों पर नदामत होती है तो यूं इन्सान को साबिक़ा गुनाहों से तौबा की तौफ़ीक़ मिल जाती है जैसा कि हज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते है : اَلتَّفَكُّرُ فِي الْخَيْرِ يَدْعُوْ اِلَى الْعَمَلِ بِهٖ وَالنَّدَمُ عَلَى الشَّرِّ يَدْعُوْ اِلٰى تَرْكِهٖ या'नी अच्छी बातों के बारे में सोचने से उन पर अ़मल की तरग़ीब मिलती है और बुराइयों पर नादिम होने से उन्हें छोड़ने की तौफ़ीक़ मिलती है।(1)

फ़िक्रे मदीना करने और इस के ज़रीए अपनी क़ब्रो आख़िरत बेहतर बनाने वालों के लिये सरकारे आ़ली वक़ार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का येह इर्शादे पाक बेहतरीन नसीह़त बुन्याद है कि पांच से पहले, पांच को ग़नीमत जानो : (1) जवानी को बुढ़ापे से पहले (2) सिह़्ह़त को बीमारी से पहले (3) मालदारी को तंगदस्ती से पहले (4) फ़राग़त को मसरूफ़िय्यत से पहले और (5) ज़िन्दगी को मौत से पहले।(2) अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : दुन्या की फ़िक्र दिल में अंधेरा जब कि आख़िरत की फ़िक्र रोशनी व नूर पैदा करती है।(3)

مدینہ

1 ..... احیاء العلوم، کتاب التفکر، فضیلۃ التفکر، ۵/۱۶۳

2 ..... مستدرک حاکم، کتاب الرقاق، نعمتان مغبون فیھما کثیر...الخ، ۵/۴۳۵، حدیث: ۷۹۱۶

3 ..... مُنَبِّہات ابنِ حجر، ص ۴

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! फ़िक्रे मदीना की ब-र-कतों से कमा ह़क़्क़ुहु मुस्तफ़ीद होने के लिये रोज़ाना सोने से पहले घर वग़ैरा के किसी कमरे में तन्हा या ऐसी जगह जहां मुकम्मल ख़ामोशी हो, आंखें बन्द कर के सर झुकाए कम अज़ कम 12 मिनट अपने रोज़मर्रा के मा'मूलात का जाएज़ा लीजिये और क़ब्रो आख़िरत की होलनाकियों का तसव्वुर बांधिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की ब-र-कत से नेक आ'माल करने, गुनाहों से बचने और अपनी क़ब्रो आख़िरत को बेहतर बनाने का ज़ेहन बनेगा ।

रोज़मर्रा के मा'मूलात का मुह़ा-सबा

अ़र्ज़ : अपने रोज़मर्रा के मा'मूलात की किस त़रह़ फ़िक्रे मदीना की जाए ?

इर्शाद : रोज़मर्रा के मा'मूलात की फ़िक्रे मदीना करने का त़रीक़ा येह है कि इन्सान रात जब बिस्तर पर सोने लगे तो उस वक़्त अपनी आंखें बन्द कर के ग़ौर करे कि सुब्ह़ नींद से बेदार होने के बा'द से अब तक मैं अपनी ज़िन्दगी के कितने घन्टे गुज़ार चुका हूं ? जिस अन्दाज़ से मैं ने येह वक़्त गुज़ारा, इस दौरान जो अफ़्आ़ल मुझ से सरज़द हुए, क्या ज़िन्दगी बसर करने का मेरा येह अन्दाज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के प्यारे रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के नज़्दीक पसन्दीदा है या ना पसन्दीदा ? अफ़्सोस ! मेरा त़र्ज़े

www.dawateislami.net

ज़िन्दगी तो ना पसन्दीदा ही शुमार होगा क्यूं कि मैं ने सब से पहला काम तो येह किया था कि नींद को अ़ज़ीज़ रखते हुए नमाज़े फ़ज्र क़ज़ा कर दी, फिर दिन चढ़े बेदार होने के बा'द सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की प्यारी और नूरानी सुन्नते मुबा-रका एक मुठ्ठी दाढ़ी शरीफ़ रखने को तर्क कर देने का सिल्सिला क़ाइम रखते हुए इसे मूंड या काट कर مَعَاذَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ गन्दी नाली तक में बहा देने से दरेग़ नहीं किया, फिर कपड़े वग़ैरा तब्दील करने के दौरान टेप रेकॉर्डर या केबल वग़ैरा पर गाने सुनने का भी सिल्सिला रहा, ना महरम औ़रतों म-सलन भाभी वग़ैरा से हंसी मज़ाक़ वग़ैरा भी जारी रही, नाश्ते में ताख़ीर की वज्ह से वालिदा के सामने गुस्ताख़ाना अन्दाज़े गुफ़्त-गू इख़्तियार कर के उन का दिल भी तो दुखाया था, अब्बाजान ने कोई काम कहा तो ह़स्बे मा'मूल उन्हें टक्का सा जवाब दे दिया था, फिर अपने दफ़्तर जाने के लिये जो लिबास मैं ने पहन रखा था वोह भी तो ख़िलाफ़े सुन्नत था, जब घर से रवाना हुवा तो चलते चलते अपने पड़ोसियों की रंग शुदा साफ़ सुथरी दीवार पर पान की पीक फेंक कर उसे दाग़दार कर डाला था, बस में कन्डेक्टर वग़ैरा से ख़्वाह म ख़्वाह उलझ कर दो चार गालियां भी तो बकी थीं और बस में बैठी बे पर्दा ख़वातीन को मुसल्सल घूरा भी तो था, फिर दौराने मुला-ज़मत अपनी ड्यूटी पूरी करने के बजाए इधर उधर की बातों में वक़्त ज़ाएअ़ कर दिया जब कि मुशा-हरा पूरा

www.dawateislami.net

ही लूंगा, अपने साथियों की चीज़ें उन्हें ना गवार गुज़रने के बा वुजूद उन की इजाज़त के बिग़ैर इस्ति'माल कर डालीं, ज़ोह्र की नमाज़ का त़वील वक़्त अपने दोस्तों से "गप शप" करते हुए गुज़ार दिया, इसी त़रह़ अ़स्र व मग़रिब की नमाज़ें भी मैं ने दीगर मस्रूफ़िय्यात की नज़्र कर दीं, वापसी पर रश की बिना पर दूसरों को धक्के देते हुए घर वापसी के लिये बस में सुवार हो गया और बस स्टॉप से घर आते हुए कोई ग़रीब मुझ से अन्जाने में टकरा गया था तो मैं ने उस का क़ुसूर न होने के बा वुजूद उसे गिरेबान से पकड़ कर पीट डाला था, घर पहुंच कर "शदीद थकावट" की वज्ह से इ़शा की नमाज़ भी न पढ़ी और रात का खाना खाने के बा'द "फ़्रेश (Fresh)" होने के लिये आवारा दोस्तों की मह़फ़िल में जा बैठा, फ़ोह़्श कलामी, गाली गलोच, ताश का खेल इस मह़फ़िल की "नुमायां ख़ुसूसिय्यात" थीं, जब रात गए घर लौटा तो नींद से आंखें बन्द होने लगीं और मैं सोने के लिये बिस्तर पर चला आया, यूं मैं ने सारा दिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी में गुज़ार दिया।

इस मक़ाम पर पहुंच कर आंखें खोल कर अपने आप से यूं मुख़ातब हो कि ऐ नादान ! तू कब तक इसी मन्हूस त़र्ज़े ज़िन्दगी को अपनाए रखेगा ? क्या रोज़ाना यूंही तेरे नामए आ'माल में गुनाहों की ता'दाद बढ़ती रहेगी ? क्या तुझे नेकियों की बिल्कुल ह़ाजत नहीं ? क्या तुझ में इतनी हिम्मत व त़ाक़त है कि दोज़ख़ के अ़ज़ाबात बरदाश्त कर

www.dawateislami.net

सके ? क्या तू जन्नत से महरूमी का दुख बरदाश्त कर पाएगा ? याद रख ! अगर अब भी तू ख़्वाबे ग़फ़्लत से बेदार न हुवा तो मौत के झटके बिल आख़िर तुझे झन्झोड़ कर उठा देंगे । लेकिन अफ़्सोस ! उस वक़्त बहुत देर हो चुकी होगी, पछताने के सिवा तू कुछ न कर सकेगा । अभी तू ज़िन्दा है, इस लिये इस वक़्त को ग़नीमत जान और संभल जा और अपनी इस मुख़्तसर ज़िन्दगी को ख़ुदाए अह़-कमुल ह़ाकिमीन جَلَّ جَلَالُہٗ की इत़ाअ़त और उस के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सुन्नतों की इत्तिबाअ़ में बसर कर ले ।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! रात जब सोने लगें तो बयान कर्दा त़रीक़े के मुत़ाबिक़ दिन भर के अपने आ'माल व अफ़्आ़ल को याद कर लिया करें, अगर कोई नेक काम किया हो तो इस पर शुक्र बजा लाएं और अगर مَعَاذَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ कोई गुनाह सरज़द हुवा है तो उस से तौबा करते हुए आयिन्दा उस से बचने का पक्का अ़ह्द कर लीजिये इस त़रह़ नेकियां करने और गुनाहों से बचने का ज़ेह्न बनेगा । ह़ज़रते सय्यिदुना मक्हूल शामी قُدِّسَ سِرُّہُ السَّامِی फ़रमाते हैं : इन्सान जब बिस्तर पर आराम करने लगे तो अपना मुह़ा-सबा करे कि आज उस ने क्या आ'माल किये ? फिर अगर उस ने अच्छे आ'माल किये हों तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र करे और अगर उस से गुनाह सरज़द हुए हों तो तौबा व इस्तिग़्फ़ार करे क्यूं कि अगर येह ऐसा न करेगा तो उस ताजिर की त़रह़

www.dawateislami.net

होगा जो ख़र्च करता जाए लेकिन हिसाब किताब न रखे तो एक वक़्त ऐसा आएगा कि वोह कंगाल हो जाएगा।[1] इस के इलावा नज़्अ़ की कैफ़िय्यात और क़ब्र के इम्तिहान का तसव्वुर बांध कर भी फ़िक्रे मदीना की जा सकती है।

वक़्ते नज़्अ़ और क़ब्र के इम्तिहान का तसव्वुर

अ़र्ज़ : नज़्अ़ की कैफ़िय्यात और क़ब्र के इम्तिहान का किस त़रह़ तसव्वुर बांध कर मुह़ा-सबा किया जाए ?

इर्शाद : अपनी आंखें बन्द कर के नज़्अ़ की कैफ़िय्यात और क़ब्र के इम्तिहान का तसव्वुर इस त़रह़ कीजिये कि मेरी मौत का वक़्त आन पहुंचा और मुझ पर ग़शी त़ारी हो चुकी है, रिश्तेदार वग़ैरा बे बसी के आ़लम में मुझे मौत के मुंह में जाता हुवा देख रहे हैं। नज़्अ़ की ना क़ाबिले बयान तकालीफ़ का सामना है, ज़बान की क़ुव्वते गोयाई रुख़्सत हो चुकी, मुझे सख़्त प्यास महसूस हो रही है। इसी अस्ना में किसी ने सिरहाने सूरए यासीन शरीफ़ की तिलावत शुरूअ़ कर दी, रिश्तेदारों की सूरतें मद्धम होती नज़र आ रही हैं। अब गले से ख़र-ख़राहट की आवाज़ें आने लगीं और रूह़ ने जिस्म का साथ छोड़ दिया। मेरी मौत वाक़ेअ़ हो जाने के बा'द अ़ज़ीज़ो अक़ारिब पर गिर्या त़ारी हो गया। बीवी बच्चे, बहन भाई, और मां बाप वग़ैरा सभी शिद्दते ग़म से आंसू बहा रहे हैं और कुछ लोग मेरे घर वालों

مدینہ

[1] ..... تنبیہ الغافلین، باب التفکر، ص ۳۰۹

www.dawateislami.net

को दिलासा दे रहे हैं। उन में से किसी ने आगे बढ़ कर मेरी बे नूर आंखें बन्द कर दीं और पाउं के दोनों अंगूठे और दोनों जबड़ों को कपड़े की पट्टी से बांध दिया। फिर कुछ लोग क़ब्र की तय्यारी के लिये और कुछ कफ़न व तख़्ताए ग़ुस्ल लाने के लिये रवाना हो गए। ग़ुस्ल का इन्तिज़ाम होने पर मुझे तख़्ताए ग़ुस्ल पर लिटा कर ग़ुस्ल दिया गया और सफ़ेद कफ़न पहना कर आख़िरी दीदार के लिये घर वालों के सामने लिटा दिया गया। मेरे चाहने वालों ने आख़िरी मर्तबा मुझे देखा कि येह चेहरा अब दुन्या में दोबारा हमें दिखाई न देगा। पूरे घर की फ़ज़ा पर अ़जीब सोग-वारी छाई हुई है, दरो दीवार पर उदासी त़ारी है। बिल आख़िर ! मेरी चारपाई को कन्धों पर उठा लिया गया और मैं ने एक ह़सरत भरी नज़र अपने घर पर डाली कि येह वोही घर है जहां मेरी पैदाइश हुई, मेरा बचपन गुज़रा, यहीं मैं ने जवानी की बहारें देखीं, अपने कमरे की त़रफ़ देखा जहां अब कोई दूसरा बसेरा करेगा, अपने इस्ति'माल की चीज़ों की त़रफ़ देखा जिन्हें अब कोई और इस्ति'माल करेगा, अपने हाथों से लगाए हुए पोदों की जानिब देखा जिन की निगह्बानी अब कोई दूसरा करेगा। लोग मेरा जनाज़ा अपने कन्धों पर उठाए जनाज़ा गाह की त़रफ़ बढ़ना शुरूअ़ हो गए। मैं ने इन्तिहाई ह़सरत के साथ आख़िरी मर्तबा अपने मां बाप, बीवी बच्चों, भाई बहनों, दीगर रिश्तेदारों, दोस्तों और मह़ल्ले वालों की त़रफ़ देखा, उन गलियों, उन रास्तों को

www.dawateislami.net

देखा जिन से गुज़र कर कभी मैं अपने कामकाज या स्कूल वग़ैरा के लिये जाया करता था।

जनाज़ा गाह पहुंच कर मेरी नमाज़े जनाज़ा अदा की गई, इस के बा'द मेरी चारपाई का रुख़ क़ब्रों की जानिब कर दिया गया, जहां मुझे त़वील अ़र्से के लिये किसी तारीक क़ब्र में तन्हा छोड़ दिया जाएगा, येह वोही क़ब्रिस्तान है कि जहां दिन के उजाले में तन्हा आने के तसव्वुर ही से मेरा कलेजा कांपता था। येह वोही क़ब्र है जिस के बारे में कहा गया कि "क़ब्र या तो जन्नत के बाग़ों में से एक बाग़ है या जहन्नम के गढ़ों में से एक गढ़ा"(1) और येह भी कहा गया है कि " क़ब्र आख़िरत की सब से पहली मन्ज़िल है, अगर साहिबे क़ब्र ने इस से नजात पा ली तो बा'द (या'नी क़ियामत) का मुआ़-मला आसान है और अगर इस से नजात न पाई तो बा'द का मुआ़-मला ज़ियादा सख़्त है"(2) वहां पहले से दफ़्न मुर्दों ने येह कह कर मेरे रन्जो ग़म में इज़ाफ़ा कर दिया कि "ऐ अपने पड़ोसियों और भाइयों के बा'द दुन्या में रहने वाले ! क्या तू हम से इ़ब्रत नहीं पकड़ सकता था ? हम यहां पहले चले आए क्या तू इस पर ग़ौरो फ़िक्र नहीं कर सकता था ? क्या तू न जानता था कि हमारे आ'माल का सिल्सिला ख़त्म हो चुका है और तेरे पास मोहलत है ? पिछले लोग जो आ'माल न कर सके तूने

مدینہ

1 ...... ترمذی، کتاب صفۃ القیامۃ، باب (ت:۹۱)، ۲۰۹/۴، حدیث: ۲۴۶۸

2 ...... ترمذی، کتاب الزھد، باب (ت:۵)، ۱۳۸/۴، حدیث: ۲۳۱۵

www.dawateislami.net

उन का एहतिमाम क्यूं न किया ?[1] क़ब्र की इस पुकार ने मुझे दहशत नाक कर दिया कि "ऐ दुन्या से धोका खाने वाले ! तूने उन रिश्तेदारों से इब्रत क्यूं न पकड़ी जिन्हें ज़मीन के गढ़े में डाल दिया गया, येह वोही थे जिन्हें दुन्या ने तुझ से पहले धोके में रखा फिर मौत उन्हें क़ब्रों की तरफ़ ले आई"[2] येह तो वोही जगह है कि जहां "दो फ़िरिश्ते अपने दांतों से ज़मीन चीरते हुए आते हैं, उन की शक्लें निहायत डरावनी और हैबतनाक होती हैं, उन के बदन का रंग सियाह और आंखें सियाह और नीली, और देग की बराबर और शो'लाज़न हैं, और उन के महीब (ख़ौफ़नाक) बाल सर से पाउं तक, और उन के दांत कई हाथ के, जिन से ज़मीन चीरते हुए आएंगे, उन में एक को मुन्कर, दूसरे को नकीर कहते हैं, मुर्दे को झन्झोड़ते और झिड़क कर उठाते और निहायत सख़्ती के साथ करख़्त आवाज़ में सुवाल करते हैं। पहला सुवाल : مَنْ رَّبُّكَ؟ तेरा रब कौन है ? दूसरा सुवाल : مَادِيْنُكَ؟ तेरा दीन क्या है ? तीसरा सुवाल : مَاكُنْتَ تَقُوْلُ فِيْ هٰذَا الرَّجُل؟ इन के बारे में तू क्या कहता था ?"[3] येह सोच कर मेरा दिल डूबा जा रहा है कि गुनाहों की नुहूसत के सबब मेरी क़ब्र कहीं दोज़ख़ का गढ़ा न बना दी जाए। ऐ काश ! मैं ने ज़िन्दगी

مدینہ

1 ..... احیاء العلوم، کتاب ذکر الموت وما بعدہ، بیان کلام القبر للمیت، ۵/۲۵۳

2 ..... احیاء العلوم، کتاب ذکر الموت وما بعدہ، بیان کلام القبر للمیت، ۵/۲۵۳

3 ..... बहारे शरीअ़त, जि. 1, हिस्सा : 1, स. 106,107

www.dawateislami.net

में नेकियां कमाई होतीं, अफ़्सोस ! मैं ने गुनाहों से परहेज किया होता, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अह़कामात पर अ़मल किया होता, आह ! अब मेरा क्या बनेगा !

इस के बा'द आंखें खोल दीजिये और अपने आप से मुख़ातिब हो कर कहिये कि "अभी मैं ज़िन्दा हूं, अभी मेरी सांसें चल रही हैं, इन ह़सरत आमेज़ लम्ह़ात के आने से पहले पहले मुझे अपनी क़ब्र को जन्नत का बाग़ बनाने की जिद्दो जह्द में लग जाना चाहिये लिहाज़ा अब मैं ख़ूब नेकियां करूंगा, सरकारे आ़ली वक़ार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की प्यारी प्यारी सुन्नतों पर अ़मल करूंगा, गुनाहों और बुरे लोगों की सोह़बत से दूर रहूंगा ताकि कल मुझे पछताना न पड़े ।" इस के इ़लावा वक़्तन फ़ वक़्तन क़ियामत के इम्तिह़ान और मैदाने मह़शर के कठिन वक़्त को भी सामने रख कर अपने नफ़्स का मुह़ा-सबा किया जा सकता है ।

क़ियामत के इम्तिह़ान और मैदाने मह़शर का तसव्वुर

अ़र्ज़ : क़ियामत के इम्तिह़ान और मैदाने मह़शर का तसव्वुर बांध कर अपना मुह़ा-सबा करने का त़रीक़ा भी इर्शाद फ़रमा दीजिये ।

इर्शाद : क़ियामत के इम्तिह़ान और मैदाने मह़शर का तसव्वुर

www.dawateislami.net

यूं कीजिये कि मैं ने क़ब्र में एक त़वील अ़र्सा गुज़ारने के बा'द अरबों खरबों मुर्दों की त़रह़ वहां से निकल कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में ह़ाज़िरी के लिये मैदाने मह़शर की त़रफ़ बढ़ना शुरूअ़ कर दिया है। सूरज निहायत कम फ़ासिले पर रह कर आग बरसा रहा है, उस की तपिश से बचने के लिये कोई साया भी मुयस्सर नहीं, गरमी और प्यास से बुरा ह़ाल है, हुजूम की कसरत की वज्ह से धक्के लग रहे हैं। अन्दरूनी कैफ़िय्यत येह है कि ज़िन्दगी भर, की जाने वाली **अल्लाह** तआ़ला की ना फ़रमानियों का सोच कर दिल डूबा जा रहा है, इन के नतीजे में मिलने वाली जहन्नम की होलनाक सज़ाओं के तसव्वुर से ही कलेजा कांप रहा है, दिल भी बेचैनी का शिकार है कि येह तो वोही इम्तिह़ान गाह है जिस के बारे में ह़दीसे पाक में फ़रमाया गया कि "क़ियामत के दिन इन्सान उस वक़्त तक क़दम न हटा सकेगा जब तक उस से पांच सुवालात न कर लिये जाएं (1) तुम ने ज़िन्दगी कैसे बसर की ? (2) जवानी किस त़रह़ गुज़ारी ? (3) माल कहां से कमाया ? और (4) कहां कहां ख़र्च किया ? (5) अपने इ़ल्म के मुत़ाबिक़ कहां तक अ़मल किया ?"[1]

अब उ़म्र भर की कमाई का ह़िसाब देने का वक़्त आन पहुंचा लेकिन अफ़्सोस ! मुझे अपने दामन में सिवाए गुनाहों के कुछ दिखाई नहीं दे रहा, शिद्दत की बे बसी के आ़लम में इमदाद त़लब निगाहें इधर उधर दौड़ा रहा हूं लेकिन कोई

मदينه

1 ......ترمذی، کتاب صفۃ القیامۃ والرقائق والورع، باب فی القیامۃ، ۴/۱۸۸، حدیث: ۲۴۲۴

www.dawateislami.net

सहारा दिखाई नहीं दे रहा, पछतावे का एह़सास भी सता रहा है कि **अल्लाह** तआला की बारगाह में पेश करने के लिये मेरे पास कुछ भी तो नहीं क्यूं कि शरीअ़त ने जो करने का हुक्म दिया वोह मैं ने नहीं किया म-सलन मुझे रोज़ाना पांच वक़्त मस्जिद में बा जमाअ़त नमाज़ पढ़ने का हुक्म मिला लेकिन अफ़्सोस ! मैं नींद, मस्रूफ़िय्यत, थकन और दोस्तों की मह़फ़िल वग़ैरा के सबब उन को क़ज़ा करता रहा, मुझे र-मज़ानुल मुबारक के महीने में रोज़ा रखने का कहा गया लेकिन अफ़्सोस ! मैं मा'मूली बीमारी और मुख़्तलिफ़ ह़ीलों बहानों से रोज़ा रखने की सआ़दत से मह़रूम होता रहा, मुझे मख़्सूस शराइत़ के पूरा होने पर ज़कात व ह़ज की अदाएगी का हुक्म हुवा लेकिन अफ़्सोस ! मैं माल की मह़ब्बत की वज्ह से ज़कात व ह़ज की अदाएगी से कतराता रहा और जिस जिस गुनाह से बचने की तल्क़ीन की गई थी मैं उन्ही गुनाहों में रात दिन मुलव्वस रहा म-सलन मुझे किसी मुसल्मान को बिला इजाज़ते शर-ई तक्लीफ़ देने से रोका गया लेकिन आह ! मैं मुसलमानों पर जुल्म ढाता रहा, वालिदैन को सताने से मन्अ़ किया गया लेकिन आह ! मैं ने वालिदैन की ना फ़रमानी कर के उन को सताना अपनी आ़दत बना लिया था, झूट, ग़ीबत, चुग़ली, फ़ोह़्श कलामी और गाली गलोच से अपनी ज़बान पाक रखने का कहा गया लेकिन आह ! मैं अपनी ज़बान को क़ाबू में न रख सका, मुझे ग़ीबत, फ़ोह़्श कलामी वग़ैरा

www.dawateislami.net

सुनने से रोका गया लेकिन मैं अपनी समाअ़त पाकीज़ा न रख सका, दिल को बुग़्ज़, ह़सद, तकब्बुर, बद गुमानी, शमातत (किसी के नुक़्सान पर ख़ुश होना), ना जाइज़ लालच व ग़ुस्सा वग़ैरा से ख़ाली रखने का इर्शाद हुवा लेकिन आह ! मैं अपने दिल को इन ग़िलाज़तों से न बचा सका। **आह** सद आह ! येह दोनों हुक्म तोड़ने के बा'द मैं किस मुंह से उस क़ह्हारो जब्बार عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर अपने आ'माले ज़िन्दगी का ह़िसाब दूंगा ? और फिर ऐसी ख़त़रनाक सूरते ह़ाल कि ख़ुद मेरे आ'ज़ाए जिस्मानी म-सलन हाथ, पाउं, आंख, कान, ज़बान वग़ैरा मेरे ख़िलाफ़ गवाही देने के लिये बिल्कुल तय्यार हैं। दूसरी त़रफ़ अपनी मुख़्तसर सी ज़िन्दगी में नेक आ'माल इख़्तियार करने वालों को मिलने वाले इन्आ़मात देख कर अपने करतूतों पर शदीद अफ़्सोस हो रहा है कि वोह इत़ाअ़त गुज़ार बन्दे तो सीधे हाथ में नामए आ'माल ले कर शादां व फ़रह़ां जन्नत की त़रफ़ बढ़े चले जा रहे हैं लेकिन ना मा'लूम मेरा अन्जाम क्या होगा ? कहीं ऐसा न हो कि मुझे उलटे हाथ में नामए आ'माल थमा कर जहन्नम में जाने का हुक्म सुना दिया जाए और सारे अ़ज़ीज़ो अक़ारिब की नज़रों के सामने मुझे मुंह के बल घसीट कर जहन्नम में डाल दिया जाए, हाए मेरी हलाकत ! हाए मेरी रुस्वाई (وَالعِیَاذُبِاللّٰہ) **यहां** पहुंच कर अपनी आंखें खोल दीजिये और अपने आप से मुख़ातिब हो कर यूं कहिये कि "अभी

www.dawateislami.net

येह वक़्त नहीं आया, अभी तो मैं दुन्या में हूं, इस मुख़्तसर सी ज़िन्दगी को ग़नीमत जानूं और अपनी आख़िरत संवारने की कोशिश में मस्रूफ़ हो जाऊं ।" फिर पुख़्ता इरादा कीजिये कि "मैं अपने रब तआ़ला का इताअ़त गुज़ार बन्दा बनने के लिये उस के अह़कामात पर अभी और इसी वक़्त अ़मल शुरूअ़ कर दूंगा ताकि कल मैदाने मह़शर में मुझे पछताना न पड़े ।"

कुछ नेकियां कमा ले जल्द आख़िरत बना ले
कोई नहीं भरोसा ऐ भाई ! ज़िन्दगी का

(वसाइले बख़्शिश)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! फ़िक्रे मदीना के दौरान हो सके तो रोने की कोशिश कीजिये और अपने आंसूओं को बहने दीजिये कि जो रोता है उस का काम होता है । अगर रोना न आए तो रोने जैसी सूरत ही बना लीजिये कि अच्छों की नक़्ल भी अच्छी होती है । ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : रोया करो, अगर रोना न आए तो रोने जैसी सूरत ही बना लिया करो ।[1] अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना मौलाए काएनात, मौला मुश्किल कुशा, अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم ने फ़रमाया : जब तुम में से कोई **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ख़ौफ़ से रोए तो वोह अपने आंसूओं को कपड़े से

مدینہ

1 ..... ابنِ ماجہ، کتاب الزھد، باب الحزن والبکاء، ۴/۴۶۶-۴۶۷، حدیث: ۴۱۹۶

www.dawateislami.net

साफ़ न करे बल्कि रुख़्सारों पर बह जाने दे कि वोह इसी हालत में रब तआ़ला की बारगाह में ह़ाज़िर होगा।[1]

रोने वाली आंखें मांगो, रोना सब का काम नहीं
ज़िक्रे महृब्बत आ़म है लेकिन, सोज़े महृब्बत आ़म नहीं

अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام की ता'दाद मुक़र्रर करना कैसा ?

अ़र्ज़ : लोगों में मशहूर है कि एक लाख चौबीस हज़ार अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام दुन्या में तशरीफ़ लाए, येह कहां तक दुरुस्त है ?

इर्शाद : अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की ता'दाद मुअ़य्यन करना जाइज़ नहीं, ता'दाद मुअ़य्यन करने के बजाए यूं कहा जाए कि "कमो बेश एक लाख चौबीस हज़ार अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام दुन्या में तशरीफ़ लाए।" दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ (1250) सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल किताब **बहारे शरीअ़त** जिल्द अव्वल सफ़्ह़ा 52 पर है : अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की कोई ता'दाद मुअ़य्यन करना जाइज़ नहीं कि ख़बरें इस बाब में मुख़्तलिफ़ हैं और ता'दादे मुअ़य्यन पर ईमान रखने में नबी को नुबुव्वत से ख़ारिज मानने या ग़ैरे नबी को नबी जानने का एह़तिमाल है और येह दोनों बातें कुफ़्र हैं लिहाज़ा येह अ़क़ीदा रखना चाहिये कि हमारा **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के हर नबी पर ईमान है।

مدینہ

[1] ...... شعب الایمان، باب فی الخوف من اللہ تعالی، ۱/۴۹۳-۴۹۴، حدیث: ۸۰۸

www.dawateislami.net

आवागोन किसे कहते है ?

अ़र्ज़ : "आवागोन" किसे कहते हैं ?

इर्शाद : ग़ैर मुस्लिमों का येह अ़क़ीदा है कि इन्सान के मरने के बा'द उस की रूह़ किसी दूसरे बदन में चली जाती है ख़्वाह वोह बदन इन्सान का हो या किसी जानवर का इसे आवागोन कहते हैं जैसा कि दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक–त–बतुल मदीना की मत़्बूआ़ 1250 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **बहारे शरीअ़त** जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 103 पर है : येह ख़याल कि वोह रूह़ किसी दूसरे बदन में चली जाती है, ख़्वाह वोह आदमी का बदन हो या किसी और जानवर का जिस को तनासुख़ और आवागोन कहते हैं। मह़्ज़ बात़िल और इस का मानना कुफ़्र है।[1]

इसी त़रह़ के एक सुवाल के जवाब में सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह मुफ़्ती मुह़म्मद अ़मजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى **फ़तावा अम्जदिय्या** में तह़रीर फ़रमाते हैं : इस क़ौल से ज़ाहिर येही मा'लूम होता है कि वोह शख़्स तनासुख़ या'नी आवागोन का क़ाइल है क्यूं कि वोह कहता है कि अपने आ'माल के मुत़ाबिक़ बारे दीगर (दूसरी बार) पैदा होना है जिस का साफ़ मत़लब येह है कि अगर आ'माल अच्छे हों तो उस की रूह़ अच्छे जिस्म में जन्म लेती है और बुरे आ'माल हों तो जानवर वग़ैरा के जिस्म

مدینہ

1 ...... बहारे शरीअ़त, जि. 1, हिस्सा : 1, स. 103

www.dawateislami.net

में जन्म होता है (येह तनासुख़ है) और तनासुख़ का क़ौल बातिले महज़ है । मुसल्मान तो मुसल्मान किसी अहले किताब यहूदो नसारा के नज़्दीक भी दुरुस्त नहीं । क़ुरआन का हुक्म तो येह है :

ثُمَّ اِنَّكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ تُبْعَثُوْنَ ﴿۱۶﴾
(پ۱۸، المؤمنون:۱۶)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : फिर तुम सब क़ियामत के दिन उठाए जाओगे ।

और फ़रमाता है :

مِنْهَا خَلَقْنٰكُمْ وَ فِيْهَا نُعِيْدُكُمْ وَ مِنْهَا نُخْرِجُكُمْ تَارَةً اُخْرٰى ﴿۵۵﴾
(پ۱۶، طٰہٰ:۵۵)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : हम ने ज़मीन ही से तुम्हें बनाया और इसी में तुम्हें फिर ले जाएंगे और इसी से तुम्हें दोबारा निकालेंगे ।

या'नी मरने के बा'द फिर ज़मीन से उठाए जाओगे । येह अक़ीदा मुसल्मानों का है कि मरने के बा'द बअ्स (या'नी उठना) होगा । अपनी अपनी क़ब्रों से उठाए जाएंगे, न येह कि एक रूह मु-तअ़द्दद अजसाम लेती रहे ।[1] बा'ज़ अवक़ात औ़रतें ग़ुस्से में आ कर बच्चे को कह देती हैं : कौन से जन्म में सुधरेगा ? مَعَاذَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ येह ग़ैर मुस्लिमों से सीखा है क्यूं कि इस्लामी अक़ीदे में हर एक का एक ही बार जन्म होता है । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें इस्लामी अक़ाइदो मुआ-मलात सीखने और फिर इन के मुताबिक़ अमल करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए । اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

مدینہ

1 ..... फ़तावा अम्जदिय्या, जि. 2, हिस्सा : 4, स. 443, 444

www.dawateislami.net

दुन्या के तमाम पानियों से अफ़्ज़ल पानी

अ़र्ज़ : दुन्या के तमाम पानियों में कौन सा पानी सब से अफ़्ज़ल है ?

इर्शाद : दुन्या के तमाम पानियों में सब से अफ़्ज़ल पानी वोह है जो सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार, ब अ़ताए परवर दगार दो आ़लम के मालिको मुख़्तार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नूरानी उंग्लियों से निकला है चुनान्चे फ़िक़्हे ह़-नफ़ी की मश्हूरो मा'रूफ़ किताब **अल अश्बाह वन्नज़ाइर** में है : जो पानी सरकारे आ़ली वक़ार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुबारक उंग्लियों से निकला वोह पानी तमाम पानियों से अफ़्ज़ल है।(1)

इस की शर्ह़ में ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा शैख़ अह़मद बिन मुह़म्मद ह़मवी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं : तमाम पानियों में सब से अफ़्ज़ल वोह पानी है जो नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुबारक उंग्लियों से निकला, इस के बा'द आबे ज़मज़म, इस के बा'द आबे कौसर फिर इस के बा'द दरियाए नील का पानी अफ़्ज़ल है और इस के बा'द बाक़ी नहरों का पानी अफ़्ज़ल है।(2)

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : आबे ज़मज़म सारे

مدینہ

1 ..... الاشباہ والنظائر، الفن الرابع الالغاز، کتاب الطہارۃ، ص ۳۴۱

2 ..... غمز عیون البصائر، الفن الرابع الالغاز، کتاب الطہارۃ، ۳/ ۲۶۲

www.dawateislami.net

पानियों से ह़त्ता कि जन्नत के कौसरो सल-सबील से भी अफ़्ज़ल है वरना फ़िरिश्ते कौसर लाते और क्यूं न हो कि येह पानी ह़ज़रते इस्माइ़ल عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के पाउं से पैदा हुवा। इस लिये अफ़्ज़ल वोह पानी है जिस के चश्मे हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की उंग्लियों से छूटे इस पानी से (भी) अफ़्ज़ल हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुंह शरीफ़ का लुआ़ब है कि इन दोनों पानियों को हुज़ूर सय्यिदुल अम्बिया عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से निस्बत है।[1]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा कि हमारे प्यारे आक़ा, मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मुबारक उंग्लियों से निकलने वाला पानी दुन्या के तमाम पानियों से अफ़्ज़ल है। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की उंग्लियों से पानी के चश्मे जारी होना यक़ीनन आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का अ़ज़ीमुश्शान मो'जिज़ा है इस मो'जिज़े का ज़िक्र करते हुए ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं ने शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को देखा कि जब कि अ़स्र की नमाज़ का वक़्त क़रीब हुवा और लोगों ने पानी तलाश किया तो न पाया तो सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास थोड़ा सा पानी लाया गया, सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस बरतन में अपना दस्ते अक़्दस रखा और लोगों को हुक्म दिया कि वोह इस से वुज़ू करें।

1 ..... मिरआतुल मनाजीह़, जि. 8, स. 114

www.dawateislami.net

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं ने देखा कि पानी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मुबारक उंग्लियों से फूट रहा है यहां तक कि सब लोगों ने वुज़ू कर लिया ।[1] इस अ़ज़ीमुश्शान मो'जिज़े की अ़क्कासी करते हुए आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن क्या ख़ूब इर्शाद फ़रमाते हैं :

उंग्लियां हैं फ़ैज़ पर, टूटे हैं प्यासे झूम कर
नदियां पन्ज आबे रह़मत की हैं जारी वाह वाह !

(ह़दाइक़े बख़्शिश)

मछली का ख़ून पाक है या नापाक ?

अ़र्ज़ : मछली का ख़ून पाक है या नापाक ?

इर्शाद : मछली का ख़ून पाक है क्यूं कि वोह ब ज़ाहिर ख़ून है मगर ह़क़ीक़तन ख़ून नहीं होता ।[2] सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : मछली और पानी के दीगर जानवरों और खटमल और मच्छर का ख़ून पाक है ।[3]

तब्दील शुदा कपड़ा पहनने का हुक्म

अ़र्ज़ : अगर धोबी के यहां से कपड़ा तब्दील हो कर आया तो उसे पहन सकते हैं या नहीं ?

مدینہ

1 ..... بخاری، کتاب الوضو، باب التماس الوضو..الخ، ۱/۸۱، حدیث: ۱۶۹

2 ..... رد المحتار، کتاب الطھارۃ، مبحث فی بول الفأرۃ...الخ، ۱/۵۸۰

3 ..... बहारे शरीअ़त, जि. 1, ह़िस्सा : 2, स. 392 मुल-त-क़तन

www.dawateislami.net

इर्शाद : ऐसा तब्दील शुदा कपड़ा नहीं पहन सकते कि येह ह़राम है और ऐसे कपड़े में नमाज़ पढ़ना भी मक्रूहे तह़रीमी है चुनान्चे **फ़तावा र-ज़विय्या,** जिल्द 7 सफ़ह़ा 298 पर है : "बदला हुवा कपड़ा पहनना मर्द व औ़रत सब को ह़राम है और इस से नमाज़ मक्रूहे तह़रीमी ।"

खुरचन खाना कैसा ?

अ़र्ज़ : खुरचन खाना कैसा है ?

इर्शाद : खुरचन खाना सुन्नत है कि "हमारे मीठे मीठे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم खुरचन खाना पसन्द फ़रमाते थे ।"[1] और आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की पसन्द हमारी पसन्द । जब हांडी पकाई जाती है तो ग़िज़ाइय्यत नीचे की त़रफ़ उतरती है लिहाज़ा खुरचन में ज़ियादा ग़िज़ाइय्यत होती है । **मुफ़स्सिरे** शहीर **ह़कीमुल** उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : हांडी की खुरचन लज़ीज़ भी होती है ज़ूदे हज़्म भी । तमाम हांडी की त़ाक़त एक त़रफ़ और खुरचन की त़ाक़त एक त़रफ़ । ग़-रज़े कि चावल वग़ैरा की खुरचन में बहुत ख़ूबियां हैं ।[2]

दुआ़ में इधर उधर देखने के नुक़्सानात

अ़र्ज़ : दुआ़ में अक्सर लोग इधर उधर देखते और नाख़ुनों वग़ैरा

مدینہ

1 ..... مشکاۃ المصابیح، کتاب الاطعمۃ، الفصل الثانی، ۲/۹۷، حدیث: ۴۲۱۷

2 ..... मिरआतुल मनाजीह़, जि. 6, स. 37

www.dawateislami.net

से खेलते नज़र आते हैं, इस की कोई ख़ास वज्ह हो तो बयान फ़रमा दीजिये ।

इर्शाद : ह़दीसे पाक में है : اَلدُّعَاءُ مُخُّ الْعِبَادَةِ या'नी दुआ इबादत का मग़्ज़ है ।[1] दुआ जब इतनी अ़ज़ीमुश्शान इ़बादत ठहरी तो फिर शैत़ान क्यूं न इस इ़बादत में ख़लल अन्दाज़ होगा ? येही वज्ह है कि शाज़ो नादिर ही कोई मुसल्मान ऐसा होगा जो दुआ के ज़ाहिरी व बात़िनी आदाब का लिहाज़ रखते हुए दुआ मांगता होगा ।

याद रखिये ! दुआ मांगते वक़्त इधर उधर देखते रहना और नाख़ुनों वग़ैरा से खेलते रहना ला परवाही और ग़फ़्लत की अ़लामत है लिहाज़ा जब भी दुआ मांगें तो ज़ाहिरी बदन की आ़जिज़ी व इन्किसारी के साथ साथ दिल भी ह़ाज़िर हो और दुआ की क़बूलिय्यत का यक़ीन भी कि ह़दीसे पाक में है : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से दुआ करो क़बूलिय्यत का यक़ीन रखते हुए और जान रखो कि बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ किसी ग़ाफ़िल खेलने वाले दिल की दुआ क़बूल नहीं फ़रमाता ।[2] दौराने दुआ इधर उधर देखने से बचिये कि "दुआ में इधर उधर देखने से ज़वाले बसर या'नी नज़र कमज़ोर हो जाने का अन्देशा है" ।[3]

हमेशा निगाहों को अपनी झुका कर
करूं ख़ाशिआ़ना दुआ या इलाही

(वसाइले बख़्शिश)

मदीना

1 ..... تِرمِذی، کتاب الدعوات، باب ما جاء فی فضل الدعاء، ۵/۲۴۳، حدیث: ۳۳۸۲

2 ..... تِرمِذی، کتاب الدعوات، باب ما جاء فی جامع الدعوات... الخ، ۵/۲۹۲، حدیث: ۳۴۹۰

3 ..... फ़ज़ाइले दुआ, स. 67 मुलख़्ख़सन

www.dawateislami.net

दुआ में हाथ उठाने का त़रीक़ा

अ़र्ज़ : दुआ़ में हाथ उठाने का त़रीक़ा इर्शाद फ़रमा दीजिये ।

इर्शाद : दुआ़ में हाथ उठाने के चार त़रीक़े पेशे ख़िदमत हैं : "जब भी दुआ़ मांगें दोनों हाथ इस त़रह़ उठाएं कि (1) सीने की सीध में रहें (2) या कांधों की सीध में रहें (3) या चेहरे की सीध में रहें (4) या इतने बुलन्द हो जाएं कि बग़ल की सफ़ेदी नज़र आ जाए । चारों सूरतों में हथेलियां आस्मान की त़रफ़ खुली रहें कि दुआ़ का क़िब्ला आस्मान है ।"[1]

जिन को सूए आस्मां फैला के जल थल भर दिये

सदक़ा उन हाथों का प्यारे हम को भी दरकार है

(ह़दाइक़े बख़्शिश)

बग़ल की सफ़ेदी नज़र आने की वज़ाह़त

अ़र्ज़ : दुआ़ में हाथ उठाने का चौथा त़रीक़ा येह बयान किया गया है कि "हाथ इतने बुलन्द हो जाएं कि बग़ल की सफ़ेदी नज़र आ जाए" मगर क़मीस या कुर्ते में येह मुम्किन नहीं बराए करम इस की वज़ाह़त फ़रमा दीजिये ।

इर्शाद : हमारे मीठे मीठे आक़ा, मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अगर्चे कुर्ता मुबारक भी ज़ैबे ब-दने अत़्हर फ़रमाते थे मगर बारहा आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

مدینہ

1 ..... फ़ज़ाइले दुआ़, स. 75 ता 76 माख़ूज़न

www.dawateislami.net

कुर्ते की जगह चादर शरीफ़ ही लपेट लेते, विसाले ज़ाहिरी के वक़्त भी जिस्मे मुनव्वर पर चादर शरीफ़ और तहबन्दे अत़्हर था जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बर्दा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के पास गया उन्हों ने यमन का बुना हुवा एक मोटे कपड़े का तहबन्द निकाला और एक चादर निकाली जिस को मुलब्बदह कहा जाता है फिर उन्हों ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम खा कर फ़रमाया कि मह़बूबे रब्बे जुल जलाल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन्ही दो कपड़ों में विसाल फ़रमाया ।[1] लिहाज़ा चादरे मुत़्हहर जब ज़ैबे ब-दने अत़्हर होती और मदीने के ताजवर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم दुआ़ में अगर दस्ते अन्वर सरे मुअ़म्बर से ऊपर उठाते तो ब-ग़ले मुनव्वर की सफ़ेदी ज़ाहिर हो जाती ।

ना बालिग़ का ईसाले सवाब

अ़र्ज़ : क्या ना बालिग़ ईसाले सवाब कर सकता है ?

इर्शाद : जी हां कर सकता है ।[2] ना बालिग़ फ़ाएदे में रहता है । इस के गुनाह भी नहीं लिखे जाते और इस की नेकियां मक़्बूल हैं । इस पर वुज़ू लाज़िम है न ग़ुस्ल कि वोह अभी इन अह़काम का मुकल्लफ़ नहीं हुवा । हां ! इसे नमाज़ के

مدینہ

1 ..... مُسلِم، کتاب اللباس والزینة، باب التواضع فی اللباس...الخ، ص ۱۱۵۲، حدیث: ۲۰۸۰

2 ..... फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 9, स. 642 माख़ूज़न

www.dawateislami.net

लिये वुज़ू करने का कहा जाए ताकि इस की आ़दत पड़े ।

फ़तावा फ़क़ीहे मिल्लत में है : ना बालिग़ अपने अवरादो वज़ाइफ़ और क़ुरआने करीम की तिलावत का सवाब दूसरे को पहुंचाने के लिये जिस को चाहे दे सकता है कि इस में ना बालिग़ का कुछ नुक़्सान नहीं बल्कि फ़ाएदा है ।(1)

सरकार عَلَيْهِ السَّلَام की दादी जान और नानी जान का नाम

अ़र्ज़ : हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की दादीजान और नानीजान का नाम क्या था ?

इर्शाद : हमारे प्यारे आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की दादीजान का नाम "फ़ात़िमा बिन्ते अ़म्र बिन आ़इज़ बिन इमरान" और नानीजान का नाम "बर्रा बिन्ते अ़ब्दुल उ़ज़्ज़ा बिन उ़स्मान" है ।(2)

مدینہ

1 ..... फ़तावा फ़क़ीहे मिल्लत, जि.1, स. 285

2 ..... دلائل النبوة، باب ذكر شرف اصل رسول الله ﷺ، ۱/۱۸۳-۱۸۴ ملتقطاً

www.dawateislami.net

ماخذومراجع

❁	قرآنِ پاک	کلام الٰہی	❁ ❁ ❁ ❁
	نام کتاب	مصنف / مؤلف	مطبوعہ
1	کنزالایمان	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان، متوفّٰی ۱۳۴۰ھ	مکتبۃ المدینہ ۱۴۳۲ھ
2	صحیح البخاری	امام ابوعبداللہ محمد بن اسماعیل بخاری، متوفّٰی ۲۵۶ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۱۹ھ
3	صحیح مسلم	امام مسلم بن حجاج قشیری نیشاپوری، متوفّٰی ۲۶۱ھ	دارابن حزم بیروت ۱۴۱۹ھ
4	سنن الترمذی	امام محمد بن عیسٰی ترمذی، متوفّٰی ۲۷۹ھ	دارالفکر بیروت ۱۴۱۴ھ
5	سنن ابن ماجہ	امام محمد بن یزید القزوینی ابن ماجہ، متوفّٰی ۲۷۳ھ	دارالمعرفہ بیروت ۱۴۲۰ھ
6	سنن النسائی	امام احمد بن شعیب نسائی، متوفّٰی ۳۰۳ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۶ھ
7	المستدرک	امام ابوعبداللہ محمد بن عبداللہ حاکم، متوفّٰی ۴۰۵ھ	دارالمعرفہ بیروت ۱۴۱۸ھ
8	شعب الایمان	امام ابوبکر احمد بن حسین بیہقی، متوفّٰی ۴۵۸ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۱ھ
9	مشکوٰۃ المصابیح	علامہ محمد بن عبداللہ خطیب تبریزی، متوفّٰی ۷۴۱ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۴ھ
10	مرآۃ المناجیح	حکیم الامت مفتی احمد یار خان نعیمی، متوفّٰی ۱۳۹۱ھ	ضیاء القرآن پبلی کیشنز لاہور
11	دلائل النبوۃ	امام ابوبکر احمد بن حسین بیہقی، متوفّٰی ۴۵۸ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۳ھ
12	ردالمحتار	محمد امین ابن عابدین شامی، متوفّٰی ۱۲۵۲ھ	دارالمعرفہ بیروت ۱۴۲۰ھ
13	غمز عیون البصائر	شیخ سید احمد بن محمد حموی، متوفّٰی ۱۰۹۸ھ	باب المدینہ کراچی ۱۴۱۸ھ
14	الاشباہ والنظائر	الشیخ زین الدین بن ابراہیم الشہیر بابن نجیم، متوفّٰی ۹۷۰ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۱۹ھ
15	فتاویٰ تاتارخانیہ	علامہ عالم بن علاء انصاری دہلوی، متوفّٰی ۷۸۶ھ	باب المدینہ کراچی ۱۴۲۶ھ
16	فتاویٰ رضویہ	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان، متوفّٰی ۱۳۴۰ھ	رضا فاؤنڈیشن مرکز الاولیا لاہور
17	بہارِ شریعت	صدر الشریعہ مفتی محمد امجد علی اعظمی، متوفّٰی ۱۳۶۷ھ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
18	فتاویٰ امجدیہ	علامہ مفتی محمد امجد علی اعظمی، متوفّٰی ۱۳۶۷ھ	مکتبہ رضویہ کراچی ۱۴۱۹ھ
19	فتاویٰ فقیہ ملت	مولانا مفتی جلال الدین امجدی، متوفّٰی ۱۴۲۲ھ	شبیر برادرز لاہور ۲۰۰۵ء
20	احیاء علوم الدین	امام ابوحامد محمد بن محمد غزالی، متوفّٰی ۵۰۵ھ	دار صادر بیروت ۲۰۰۰ء

www.dawateislami.net

21	تنبیہ الغافلین	فقیہ ابو اللیث نصر بن محمد سمرقندی، متوفّٰی ۳۷۳ھ	دار الکتاب العربی بیروت ۱۴۲۰ھ
22	منتخبات ابن حجر	امام الحافظ احمد بن علی ابن حجر عسقلانی، متوفّٰی ۸۵۲ھ	پشاور
23	فضائل دعا	رئیس المتکلمین مولانا نقی علی خان، متوفّٰی ۱۲۹۷ھ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی

फ़ेहरिस्त

उ़न्वान	सफ़ह़ा	उ़न्वान	सफ़ह़ा
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	2	मछली का ख़ून पाक है या नापाक ?	26
अपने लिये कफ़न तय्यार रखना कैसा ?	2	तब्दील शुदा कपड़ा पहनने का हुक्म	26
फ़िक्रे मदीना का मत़लब और इस की अहम्मिय्यत	6	खुरचन खाना कैसा ?	27
रोज़मर्रा के मा'मूलात का मुह़ा-सबा	8	दुआ़ में इधर उधर देखने के नुक़्सानात	27
वक़्ते नज़्अ़ और क़ब्र के इम्तिह़ान का तसव्वुर	12	दुआ़ में हाथ उठाने का त़रीक़ा	29
क़ियामत के इम्तिह़ान और मैदाने मह़शर का तसव्वुर	16	बग़ल की सफ़ेदी नज़र आने की वजाह़त	29
अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام की ता'दाद मुक़र्रर करना कैसा ?	21	ना बालिग़ का ईसाले सवाब	30
आवागोन किसे कहते हैं ?	22	सरकार عَلَيْهِ السَّلَام की दादीजान और नानीजान का नाम	31
दुन्या के तमाम पानियों से अफ़्ज़ल पानी	24	मआख़िज़ो मराजेअ़	32

www.dawateislami.net

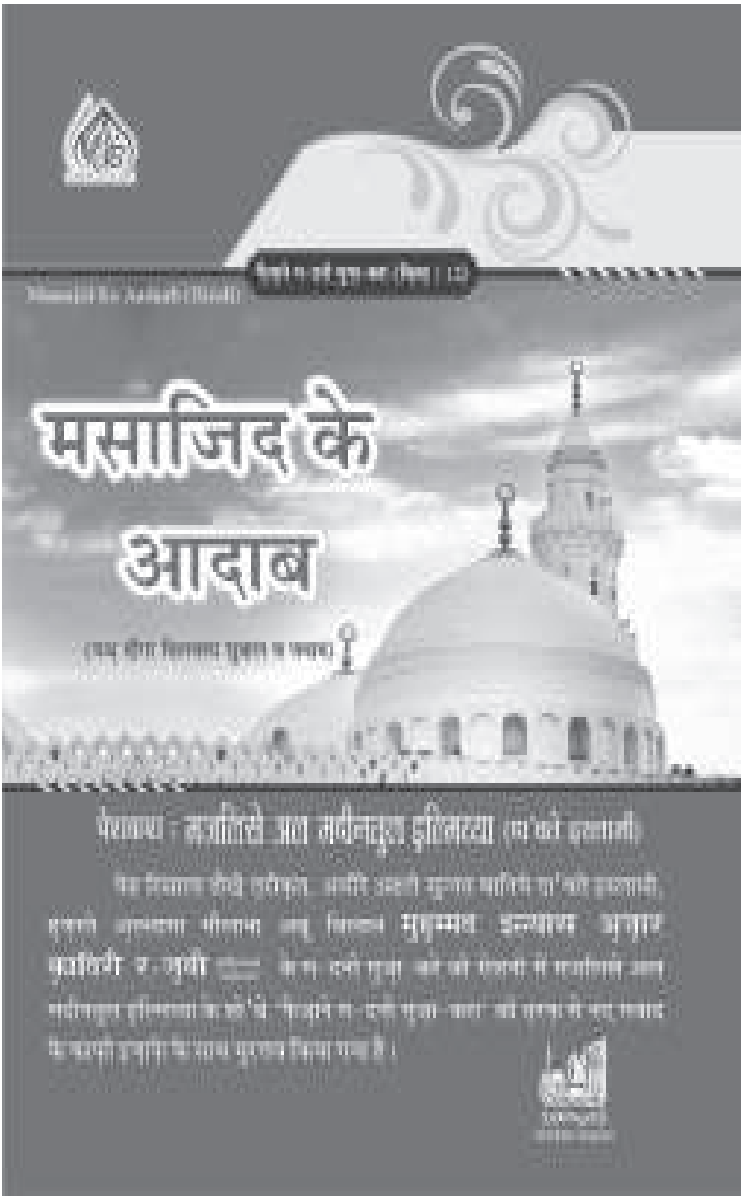

www.dawateislami.net

नेक नमाज़ी बनने के लिये

हर जुम्अ़रात बा'द नमाज़े इशा आप के यहां होने वाले **दा'वते इस्लामी** के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात शिर्कत फ़रमाइये ❁ सुन्नतों की तरबियत के लिये **म-दनी क़ाफ़िले** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ हर माह तीन दिन सफ़र और ❁ रोज़ाना **''फ़िक्रे मदीना''** के ज़रीए **म-दनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह की पहली तारीख़ में अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये।

मेरा म-दनी मक़्सद : **''मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ''** अपनी इस्लाह़ के लिये **''म-दनी इन्आ़मात''** पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये **''म-दनी क़ाफ़िलों''** में सफ़र करना है।

मक-त-बतुल मदीना®
दा'वते इस्लामी
फ़ैज़ाने मदीना, त्री कोनिया बग़ीचे के पास, मिरज़ापूर, अहमदआबाद-1, गुजरात, इन्डिया
Mo.091 93271 68200 E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com www.dawateislami.net

www.dawateislami.net